# अलवर शहर के उपान्त क्षेत्र में बदलता ग्रामीण भूदृश्य

*डॉ. कीर्ति रावत

''ग्रामीण नगरीय उपान्त नगर की बाहरी सीमा पर फैला होता है, जिसे इसकी आंतरिक सीमा स्पर्श करती है। यह कृषि भूमि उपयोग के साथ–साथ नगरीय भूमि उपयोग की विशेषताऐं रखने वाला परस्पर मिश्रित क्षेत्र होता है।'

## अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन ''अलवर शहर के उपान्त क्षेत्र में बदलता ग्रामीण भूदृश्य'' अविवादित रूप से इस क्षेत्र के विकास में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगा। अध्ययन क्षेत्र (अलवर जिला) राजस्थान राज्य के पूर्व उत्तरोत्तर भाग में 27°4' ls 28°4' उत्तरी अक्षांश एवं 76ह7श से 77ह13श पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसकी सीमा उत्तर एवं पूर्वोत्तर में हरियाणा राज्य के गुड़गांव जिले एवं पूर्व में राजस्थान का भरतपुर जिला, पश्चिम में जयपुर जिला तथा दक्षिण में दौसा एवं सवाईमाधोपुर जिलों से लगती है। अलवर जिले की जनंसख्या 2001 की जनगणनानुसार 29,92,592 है व प्रतिवर्ग किलोमीटर 357 लोग निवास करते हैं। जिले में 2001 में ग्रामीण जनसंख्या 25,57,653 व नगरीय जनसंख्या 4,34,939 थी।

मानचित्र

## मुख्य उद्देश्य

1. नगरीय उपान्त को परिसीमित करना, इसमें भूतकाल के गतिक स्वरूप को परिसीमित करना और निकट भविष्य में इसकी सीमाओं पर जोर दिया है।
2. बदलाव की प्रक्रिया को जाँच कर और भूमि उपयोग जन सांख्यिकीय और आर्थिक दृष्टि से गांवों का अध्ययन किया है।
3. कृषि व आर्थिकी में बदल रहे प्रारूपों को पता लगाकर विशेषकर आवासित क्षेत्रों, औद्योगिक और व्यापारिक केन्द्रों की बढ़ती हुई मांगों के फलस्वरूप बदल रही व्यापारिक प्रवृति का पता लगाया है।
4. उपजाऊ कृषि भूमि पर शहर में बनते हुए अतिक्रमणों का अध्ययन किया है।

### शोध परिकल्पना

किसी भी अध्ययन की शुरूआत के पीछे शोधार्थी के मस्तिष्क में उस अध्ययन विशेष के संदर्भ में पूर्व परिकल्पनाएं रहती है जिसके आधार पर अध्ययन किया जाता है। वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाओं की जांच करने का प्रयास किया गया है।

1. अलवर नगर के उपान्त क्षेत्रों में अकृषि उपयोग क्षेत्र में वृद्धि हो रही है।
2. अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक व्यवसाय में प्रतिशतांश कमी हुई है।
3. उपान्त क्षेत्र में आधारभूत सुविधा में कमी है।
4. उपान्त क्षेत्र में भूमि मूल्य में अतिशय वृद्धि हुई है।

### विधि तंत्र

अलवर नगर के बढ़ते प्रभाव एवं उसके उपान्त क्षेत्र में आये परिवर्तन को जानने के लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर अलवर नगर से 0 से 10 कि.मी. के अर्धवास वाली परिधि क्षेत्र को आन्तरिक उपान्त क्षेत्र मानकर तथा 10 से 20 कि.मी. की दूरी के बीच के क्षेत्र को बाह्य उपान्त क्षेत्र मानकर किया गया है।

### आन्तरिक उपान्त क्षेत्र

यह क्षेत्र केन्द्र सहित उसके सभी ओर फैली हुई रहती है। नगर के लगभग पूरी तरह निर्मित ओर पूर्णत नगरीकृत क्षेत्र को शामिल करते हुए अति जनघनत्व वाले क्षेत्र होते हैं।

### बाह्य उपान्त क्षेत्र

यह क्षेत्र नगर की प्रशासकीय सीमाओं के बाहर पूर्ण वर्णित बाह्य पेटी के विस्तार के रूप में दिखलाई पड़ती हैं।

यह अध्ययन पूर्णतः विभिन्न प्रकार के प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रकार के आंकड़ों पर आधारित हैं। इस क्षेत्र के कार्य के दौरान वहाँ का क्षेत्रीय सर्वेक्षण किया गया है तथा तंत्र की वस्तुस्थिति की गणना स्थानीय निवासियों, विशेषज्ञों के साक्षात्कार के द्वारा की गई है।

प्राथमिक आंकड़े एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली तैयार की गई है जिसके आधार पर अध्ययन किया गया है।

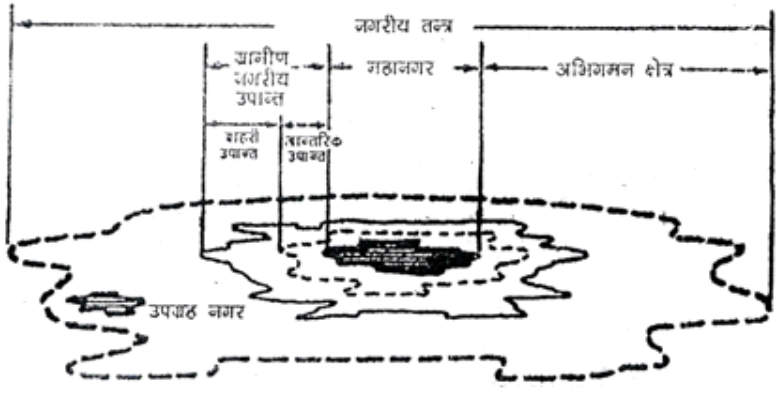

**अध्याय योजना**

प्रथम अध्याय में विषय एवं अध्ययन क्षेत्र का परिचय, शोध उद्देश्य, परिकल्पनाएँ, साहित्य समीक्षा एवं विधि तंत्र का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत भूगर्मिक संरचना, मृदाए, जलवायु, वनस्पति का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय में अलवर जिले एवं अलवर नगर के सांस्कृतिक स्वरूप के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि वितरण, घनत्व, ग्रामीण जनसंख्या लिंगानुपात एवं व्यावसायिक संरचना को समाहित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में अलवर नगर की नगरीकरण की प्रवृति का अवस्था के अनुसार वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में जनसंख्या एवं अधिवासों के आकारों का आकार एवं वितरण विभिन्न सांख्यिकी विधियों के द्वारा विश्लेषित कर परिणाम निकाले गए है जिसमें जनसंख्या के अनुसार अधिवासों का आकार अधिवासों का वितरण प्ररूप निकटतम पडोसी + विश्लेषण एवं अधिवासों के पदानुक्रम के अनुसार वितरण दिखाया गया है।

षष्ठम अध्याय में उपान्त क्षेत्र में आये आर्थिक परिवर्तनों में भूमि उपयोग प्रारूप, वन भूमि, व्यावसायिक संरचना एव औद्योगिक भू–दृश्य का वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय में नगर के उपान्त क्षेत्र में उपलब्ध परिवहन जाल एवं सुविधाए, बाजारीय संरचना, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सा सुविधाओं एवं अन्य सामुदायिक सुविधाओं में आये परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है।

अष्टम अध्याय में उपान्त क्षेत्र के आन्तरिक उपान्त तथा बाह्य उपान्त क्षेत्रों में से द्वितीय पदानुक्रम से एक, तृतीय तथा चतुर्थ पदानुक्रमों के अधिवासों में से दो–दो ग्रामों का प्रश्नावली के द्वारा का नमूना सर्वेक्षण करके उपान्त क्षेत्र में आये परिवर्तनों का वास्तविक पता लगाकर वर्णन किया गया है।

अन्त में नवे अध्याय में शोध निष्कर्ष, समस्याएँ एवं समाधान से अवगत कराया गया है।

**उपान्त क्षेत्र की समस्यायें :–**

उपान्त क्षेत्र में भूमि उपयोग और जनसंख्या विशेषताएं तीव्रता से परिवर्तित होती है। इस कारण विभिन्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होती है। अधिकांश समस्यायें प्रशासनिक तन्त्र के लचीलेपन के कारण होती है जिसमें उपान्त क्षेत्र में तीव्रता से बदलते भूदृश्य का नियोजित रूप से विकास नहीं हो पाता है।

उपान्त क्षेत्र में आवासीय कॉलोनियों का निर्माण होता है जिनकी दरे बहुत ऊँची होती है। जो सिर्फ धनाढ्य व्यक्ति ही खरीदते है। इस वजह से उपान्त क्षेत्र में अमीर और गरीब दो प्रकार के लोगों के समूह बन जाते है जो समाज के बीच अलगाव पैदा करते है।

उपान्त क्षेत्र में रहने वाले लोग अकृषि कार्यों के लिए रोजाना नगर में जाते हैं। इससे नगर में यातायात का दबाव बढ़ जाता है।

उपान्त क्षेत्र के विकास के साथ नगर का जनसंख्या घनत्व बढ़ जाता है जिससे प्रशासकों द्वारा भविष्य के लिए बनायी गयी योजनायें सफल नहीं हो पाती है।

बेतरतीब निर्मित क्षेत्र व भूखण्डों का अनियोजित वितरण से भूमि उपयोग बदलता है। कृषि भूमि तीव्र गति से नगरीय आवासों या भूखण्डों में बंटती जाती है एवं भूमाफिया तन्त्र कृषकों पर हावी हो जाता है जो कृषकों से सस्ते दामों पर जमीन खरीदकर ऊँचे दामों में बेच देता है। उपान्त में उत्पादक भूमि का हनन होता है। नगर का कचरा डालने के लिए उपान्त क्षेत्र में ही कचरा गाह स्थापित हो जाते है। उपजाऊ कृषि भूमि का रूपान्तरण अन्य आर्थिक गतिविधियों में होने

लग जाता है। भवन निर्माण के लिए ईंट बनाने के लिए ईंट भट्टों के निर्माण के लिए शहर से नजदीक की कृषि भूमि तो बेकार हो ही जाती है साथ ही पर्यावरण प्रदूषण भी होता है।

उपान्त क्षेत्र में रोजगार की दृष्टि से यहाँ की कार्यशील जनसंख्या नगरों पर निर्भर रहती है। उपान्त क्षेत्र की मूल जनसंख्या पर नगरीय प्रभाव पड़ने से वह अपनी मौलिक पहचान खो देती है। उपान्त क्षेत्र में दैनिक मजदूरी करने आने वाले लोगों से यातायात दबाव बढ़ जाता है। बढ़ते शहरीकरण के चलते असंतुलित पर्यावरण भी भविष्य की प्रमुख समस्या के रूप में उभर रहा है।

## सुझाव

### द्वितीय तथा तृतीय पदानुक्रमों के अधिवासों को विकसित करना

उपान्त क्षेत्र में आये तीन द्वितीय पदानुक्रम के अधिवास चिकानी, रामगढ़ और उमेरण को अधिक विकसित किया जाए जिसके अन्तर्गत चिकानी में विकसित हो रही शिक्षण संस्थाओं के साथ उसमें उपग्रह नगर की सुविधाए विकसित की जाये जिससे अलवर नगर में जनसंख्या का भार कम किया जा सके, रामगढ़ को औद्योगिक क्षेत्र की सुविधायें प्रदान की जाये जिससे आस–पास के लोगों को वहीं रोजगार उपलब्ध हो जाए तथा उमेरण को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जावे जिससे इसके पास स्थित सीलीसेढ, जयसमन्द, भृतहरि एवं सरिस्का में आने वाले पर्यटकों का पर्यटन भार उमेरण में ही रहें।

तृतीय पदानुक्रम के अधिवासों में स्वास्थ्य, शिक्षा, बाजार जैसी सभी सुविधाए उपलब्ध करवा दी जावे तो सर्वाधिक संख्या में स्थित चतुर्थ पदानुक्रम के अधिवास के लोग यहीं अपनी दैनिक आवश्यकताओं की जरूरतों को पूरी कर सकें।

### औद्योगिकरण विकास हेतु नियोजन

उपान्त क्षेत्र के बहुत से ग्रामों को जिनकी जनसंख्या अधिक है उनमें लघु उद्योग स्थापित करने चाहिए जिससे उस ग्राम के भूमिहीन लोगों को रोजगार के अवसर मिल सकें। कृषि, वन, पशुधन एवं खनिज सम्पदा पर आधारित उद्योगों की क्षेत्रीय आवश्यकतानुसार स्थापना हेतु सुनियोजित कार्यक्रम तैयार किए जाने चाहिए उपान्त क्षेत्र के आसपास वन क्षेत्र अधिक होने से वन उपज काफी है जिससे वन आधारित लघु उद्योगों की संभावनाएं है। कृषि आधारित उद्योगों में तिलहन आधरित उद्योगों में तेल मिलों का विकास किया जाना चाहिए। अलवर जिले में सरसों का उत्पादन बहुत अधिक मात्रा में होता है। उपान्त क्षेत्र के अन्तर्गत अलवर–भिवाड़ी सड़क मार्ग के पास आने वाले कृषि क्षेत्रों में प्याज का उत्पादन बहुत अधिक होने लगा है लेकिन उनके शीत भण्डारण गृह नहीं होने की वजह से कृषकों को लागत मूल्य से भी कम में प्याज को बेचना पड़ता है यदि उपान्त क्षेत्र में शीत भण्डारण बना दिया जाए तो कृषक अपना प्याज शीत भण्डारण में रखकर उचित मूल्य मिलने पर बेच सकते है।

अलवर में इंजीनियरिंग, घातु उद्योग, चर्म उद्योग, मूर्तिकारी, कालीन बुनना एवं मिट्टी के बर्तन जैसे उद्योग स्थापित किये जा सकते है।

### अलवर नगर के लिए सुझाव

पर्यावरण संरक्षण की विशेष आवश्यकता सभी स्तरों पर है अतः अलवर शहर के लिए शहरी स्तर पर अलग से एक पर्यावरण संरक्षण योजना बनाया जाना जरूरी है।

- किसी भी शहर के पर्यावरण की गुणवत्ता का आधार, उस शहर के ठोस कचरा प्रबन्धन पर काफी निर्भर करता है। ठोस कचरा प्रबन्धन की अनेक वैज्ञानिक पद्धतियाँ आज के समय में उपलब्ध है। अतः अलवर शहर के लिए एक आधुनिक ठोस कचरा प्रबन्धन जिसमे चिकित्सालयों एवं उद्योगों के परिसंकटमय अवशिष्ट भी शामिल है, की उचित व्यवस्था विकसित करने के लिए शहरी स्तर पर योजना बनायी जानी चाहिए।

- रोजगार को बढ़ावा देने तथा अर्थव्यवस्था में सुधार करने के लिए आर्थिक क्रियाकलापों जैसेः उद्योग, व्यावसायिक गतिविधियाँ और वाणिज्य तथा सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालयों का विकास किया जाना चाहिए।
- शहरी आधारभूत संरचना और जल आपूर्ति, सफाई, वर्षा–जल निकास, कचरा प्रबंधन, सीवरेज एवं यातायात जैस सेवाएं उचित स्तर पर प्रदान करना चाहिए।
- शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सामाजिक आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध करना चाहिए।
- शहरी गरीब लोगों के लिए मकानों के निर्माण की विशेष व्यवस्था करनी चाहिए।

रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा स्थानीय कारीगरों के कौशलों में सुधार करने के लिए अनौपचारिक क्षेत्रों में लघु पैमाने के उद्यमियों को प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन देना चाहिए।

**व्याख्याता**
**भूगोल विभाग**
**एल.बी.एस. महाविद्यालय, जयपुर**

***BIBLIOGRAPHY***

1. *Acharya, Hemlata (1956) Urbanizing Role One Lakh City," Sociological Bulletin, pp. 7-9*
2. *Andrews, R.B. (1961) "The Utility of the Economic Base Method in Calculating Urban Growth Land" Econamic vol.37, pp. 51-58.*
3. *Bala, R.(1901-81) Trends in Urbanization in India, Rawat Publication, Jaipur*
4. *Best, R.H.(1976) "The Extent and Growth of Urban Land," the Planner, vol. 62, (1) pp. 8-11*
5. *Bulsara, J.F.S.(1964) "Problems of Rapid Urbanization in India, Popular Prakashan, Bombay*
6. *Department of India Census(1971 & 2001) District Census Hand Book, Alwar.*
7. *Chapin, J.F.S.(1957) Urban Landuse Planning, Urbana University of lllineous Press*
8. *Chobot, G. and Garnier, B.(1969) Urban Geography, Longman, Londan.*
9. *Deshpande, C.D., Arunachalam, B. and Bhatt, L.S.(1980) Impact of Metropolitan City on the Surrounding Region.*
10. *Dvivedi, R.L. (1964) "Delimiting the Umland of Allahabad" The Indian Geographical Journal., Vol. 34*
11. *Dewey, R.(1960) "The Rural - Urban Continum," American Journal of Sociology, pp. 8-9*
12. *Dhabriya, S.S.(1973) "Umland of Udaipur," the Indian Journal of Geography, Vol.8*
13. *Dickinson, R.E. (1966) City and Region, A Geogrephical Integration, Butler and Tanner Ltd. London.*
14. *Diwedi, R.L.(1965) "Demographic features of Allahabad City," Geographical Review of India, P. 163-188*
15. *Directortate of Economics and Statistics, Rajasthan(2011) Some Facts about Rajasthan*
16. *Directortate of Economics and Statistics, Rajasthan(2011) District statistical Abstract.*
17. *Dutta, A.K.(1963) "Umland of Jamshedpur" Geographical Review of India, Vol. 26.*
18. *Epstien's, T.S.(1972) "Economic Development and Social change in India" (Manchester University Press)*

19. *Firey, W.(1946)"Social Aspects to Landuse Planning in the Country City Fringe." Michisan State college social Bulletine, 449.*
20. *Gans, H.J. (1962)The Urban villages New York, John Wiley.*
21. *Garnier, J.B. and Cjhanbot, G.(1967)Urban Geography, London, Lomgmans geen and company ltd.*
22. *Garrism, W.L. (1962)The Stracture of Transport Network, US Army Transportation command technical Report IT.*
23. *Gilvert, E.W. (1951)"Urban Hinterlands,"Geographical Journal, vol. 117, part-3*
24. *Gopal, Krishna (1971)"Density and Distribution of Population in the Upper Bari Doabs,"National Geographical, journal, vol. 6.*
25. *Gopi, K.H.(1978)"Process of Urban Fringe Development A Model"*
26. *Ghosal, G.S. (1972)"Urban Geography : A Trend Report,"In: A Survey of Research in Geography, Bombay: Indian Counsel of Social Science Research, pp. 203-225.*
27. *Gupta, B.L.(1987)Market Morphology of Jaipur A Geographical Analysis of A Metropoliton City Unpublished Ph.D Thesis, UOR, Jaipur.*
28. *Gupta, Arti(2001)Socio-Economic, Transformation in. S.C. and S.T. Dominoted Area of Rajasthan (A case study of Sawai Madhopur District) Unpublished Ph.D. Thesis UOR, Jaipur*
29. *Hanumappa, H.G. (1981)Urbanization Trend in India-A Case Study of Medium Towns.*
30. *Haret, J.F. (1976)"Urban Encroachment on Rural Areas,"Geographical Review, Jan. P.P. 1-17.*
31. *Jain, M.K Impact of city Neighbourhood on the Population Characteristic of the Villager" Mimeographed, Bombay, IIPS.*